



॥ शनिदेव की आरती ॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी ।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी ॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी ॥

श्याम अंग वक्र-दृष्टि चतुर्भुजा धारी ।
निलाम्बर धार नाथ गज की असवारी ॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी ॥

क्रीट मुकुट शीश सहज दिपत है लिलारी ।
मुक्तन की माल गले शोभित बलिहारी ॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी ॥

मोदक और मिष्ठान चढ़े, चढ़ती पान सुपारी ।
लोहा, तिल, तेल, उड़द महिषी है अति प्यारी ॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी ॥

देव दनुज ऋषि मुनि सुमिरत नर नारी ।
विश्वनाथ धरत ध्यान हम हैं शरण तुम्हारी ॥

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी ॥

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

<https://bhaktimargdarshan.com/>

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी ।
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें ।

Bhakti Margdarshan

